ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-7* October-2020
Anthology : The Research

अच्छा स्वास्थ्य एवं जीवर स्तर
Good Health and Living Standards

Paper Submission: 16/10/2020, Date of Acceptance: 26/10/2020, Date of Publication: 27/10/2020

दीपक सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर,
राजनीति विज्ञान विभाग,
राजकीय स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, चरखारी, महोबा,
उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

जीवन को सुखमयी एवं प्रसन्नतापूर्व बनाने के लिए जरूरी है कि देश में स्थित मेडिकल ढांचे को परखा जाए एवं उसी अनुरूप लोगों को मेडिकल सुविधाएं उपलब्ध करायी जाएं जिससे लोग निरोगी जीवन जी सकें एवं जीवन स्तर को खुषहाल बनाया जा सके। इसके लिए आवष्यक है कि पर्याप्त स्टॉफ की एवं पर्याप्त अवसंरचना की, जिससे लोगों को निरन्तर इलाज की सुविधा प्राप्त हो सके।

In order to make life happy, it is necessary to examine the medical infrastructure located in the country and provide medical facilities to the people accordingly, so that people can lead a healthy life and make their standard of living happy. For this, it is necessary to have adequate staff and adequate infrastructure, so that people can get continuous treatment.

मुख्य शब्द : मेडिकल स्टॉफ, शारीरिक जॉच मशीनें, 24 घंटे मेडिकल सुविधाएं, रोगी–चिकित्सक अनुपात, मीडिया द्वारा ध्यानाकर्षण, स्वास्थ्य पर पर्याप्त खर्च।

Medical Staff, Physical Examination Machines, 24-Hour Medical Facilities, Patient-Doctor Ratio, Attention To Media, Adequate Expenditure On Health.

प्रस्तावना

स्वतन्त्रता के बाद जहॉ देश ने शिक्षा, कृशि, विज्ञान एवं उद्योग में इतनी तरक्की की है, वहीं स्वास्थ्य के क्षेत्र में अपेक्षाकृत तरक्की की गति धीमी है। विष्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा सितम्बर, 1978 में आल्माआटा (सोवियत संघ) में आयोजित कान्फ्रेंस में सन् 2000 तक सबके लिए स्वास्थ्य की घोषणा की थी आज भी उसे पूरा नहीं किया जा सका है तथा मौलिक अधिकारों की श्रेणी में आज तक स्थान नहीं दिया जा सका है जबकि स्वास्थ्य जैसे संवेदनशील तथा समस्याग्रस्त एवं अति आवश्यक क्षेत्र पर सर्वाधिक ध्यान देने की जरूरत है क्योंकि उत्तम स्वास्थ्य के बिना स्वस्थ समाज एवं स्वस्थ राष्ट्र/प्रान्त की कल्पना नहीं की जा सकती है। आज भारत या किसी प्रदेश के लोगों को सबसे अधिक पैसा स्वास्थ्य पर खर्च हो रहा है और पैसों के अभाव में गरीब लोगों की मौतें होना आम बात हो गई है। सरकारों द्वारा समय–समय पर टीकाकरण, स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार, संक्रामक बीमारियों की रोकथाम हेतु अनेक प्रसास किए गए हैं लेकिन जिस गति से 'स्वास्थ्य' विशय को सर्वोच्च प्राथमिकता की आवष्यकता है उसकी कमी महसूस हो रही है। वैश्विक औसत के अनुसार भारत को प्रति लाख आबादी पर 154 डॉक्टर चाहिए, इस हिसाब से अभी देश में 10 लाख डॉक्टरों की नितान्त आवश्यकता है और उत्तर प्रदेश जैसे सबसे बड़े प्रदेश के लिए लाखों डॉक्टरों की जरूरत है एवं साथ ही सहायक स्टाफ की आवश्यकता है।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य देश में हर व्यक्ति को मेडिकल सुविधाओं का प्राप्त करने का अधिकार है। जिससे बेतहाशा वृद्धि हो रही बीमारियों पर समय से अंकुश लगाया जा सके एवं लोगों को बेहतरीन जीवन मिल सके जिससे सफल एवं प्रभावी लोकतन्त्र की परिकल्पना सफल सिद्ध हो सके एवं लोगों के खुशहाली का स्तर बढ़ सके।

विषयवस्तु

राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन के तहत ग्रामीण परिवारों के गरीबों, महिलाओं, वृद्धों, बच्चों को बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए आवश्यक है इस विशय को 'अतिगम्भीर' मानते हुए भारतीय प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा चलायी गयी आयुष्मान भारत योजना या प्रधानमन्त्री

जन–आरोग्य योजना जिसके अन्तर्गत 10 करोड़ बीपीएल धारक परिवार लगभग 50 करोड़ लोग इस योजना के दायरे में हैं, को बढ़ाकर लगभग सारी आबादी को इसके दायरे में लाने की जरूरत है तथा इस योजना के युद्धस्तर पर पूरे भारत में लागू करने की जरूरत है जिससे स्वास्थ्य जैसी समस्याओं से लोगों को त्वरित निजात मिल सके। अच्छा स्वास्थ्य जीवन स्तर में बदलाव लाता है जिससे समाज तथा राष्ट्र में बदलाव आता है। अच्छे स्वास्थ्य के लिए कुछ सुझाव प्रस्तुत हैं जो निम्नलिखित हैं–

1. शिक्षा के माध्यम से जैसे छोटी कक्षाओं से ही यह पढ़ाया जाए कि रोग फैलने के कारण क्या हैं तथा इसको कैसे ठीक किया जा सकता है एवं किन–किन दवाओं का प्रयोग किन–किन रोगों में किया जाता है। इस तरह की प्राथमिक जानकारी प्राप्त रहने पर कुछ हद तक रोगों से मुक्ति स्वयं प्राप्त की जा सकती है, बिना अस्पताल या डॉक्टर के पास जाए।
2. प्रत्येक मण्डल में एक मेडिकल कालेज, ब्लाक स्तर में सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र एवं प्रत्येक न्याय पंचायत स्तर पर एक प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र होना अति आवश्यक है एवं समस्त मेडिकल स्टाफ भरा हो एवं अच्छी दवाएं होना जरूरी हैं जिससे लोगों को कम समय कम दूरी में मेडिकल सुविधा आसानी से एवं त्वरित गति से प्राप्त हो सकें।
3. प्रत्येक मेडिकल कालेज, सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र, जिला अस्पतालों, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों में अभियान चलाकर समस्त पदों को भरा जाए एवं 24 घंटे की सुविधाएं उपलब्ध करायी जाएं तथ 24 घंटे जॉच की सुविधाएं भी अनवरत रूप से चलें जिससे अस्पतालों की भीड़ को भी नियन्त्रित किया जा सकता है एवं अच्छी स्वास्थ्य सुविधाएं सभी को असानी से मिल सकें।
4. अधिक से अधिक निजी अस्पतालों को भी आयुष्मान योजना से जोड़ा जाए जिससे रोगों का निदान त्वरित गति से तथा सर्वसुलभ हो सके।
5. स्वस्थ रहने के अधिकार को संविधान में संशोधन कर मौलिक अधिकारों की श्रेणी में रखा जाए जिससे इस अधिकार से वंचित लोगों द्वारा अनुच्छेद 226 के तहत उच्च न्यायालय एवं अनुच्छेद 32 के तहत सर्वोच्च न्यायालय से त्वरित मौलिक अधिकार प्राप्त किया जा सके।
6. ग्रामीण स्तर पर स्थापित स्वास्थ्य केन्द्रों पर भी न्यूनतम आवश्यक दवाओं को पर्याप्त मात्रा मे रखा जाए एवं प्रशिक्षित स्वास्थ्य रक्षकों (ए.एन.एम., आशा बहू, आंगनवाड़ी कार्यकत्री) द्वारा समय–समय पर दवाओं का वितरण समयानुसार किया जाए जिससे प्राथमिक स्तर पर बीमारियों पर रोक लगाया जा सकता है एवं गम्भीर बीमारियों से बचा जा सकता है।
7. सुगर, ब्लड प्रेशर जैसी तेजी से फैल रही जानलेवा बीमारियों को अभियान चलाकर या टीकाकरण के माध्यम से नियन्त्रित किया जाए क्योंकि इनकी वजहों से अति गम्भीर बीमारियों को होने से रोका जा सकता है।
8. सरकारी चिकित्सकों को प्राईवेट प्रैक्टिस पर पूरी तरह पाबंदी हो जिससे उनका पूरा ध्यान/शोध जनकेन्द्रित हो न कि स्वहित केन्द्रित।
9. स्वास्थ्य विभाग के समस्त अधिकारियों/कर्मचारियों की उपस्थिति प्रदेश सरकार द्वारा प्रस्तावित प्रेरणा एप (प्राथमिक शिक्षा) की तरह हो जिससे समस्त स्वास्थ्य कर्मचारियों का भरपूर उपयोग किया जा सके।
10. जनप्रतिनिधियों (सांसदों/विधायकों/नगर निकाय/पंचायती राज) को अपने क्षेत्र के अन्तर्गत आने वाले स्वास्थ्य केन्द्रों के निरीक्षण की विधिक एवं प्रभावपूर्ण व्यवस्था हो जिससे स्वास्थ्य सेवाओं को बेहतर तथा लोकतान्त्रिक बनाया जा सके एवं लोगों के जीवन स्तर में बदलाव हो सके।
11. स्वास्थ्य केन्द्रों (सभी तरह के) को नियमित निरीक्षण एवं प्रशिक्षण नितान्त आवश्यक है जिससे लापरवाही पर नियन्त्रण लगाया जा सके एवं लोगों को खुशहाल जीवन देने में सहायक सिद्ध हो सके।
12. प्रत्येक ग्राम पंचायत स्तर पर शहरों में वार्ड स्तर पर एक योग्य एवं प्रशिक्षित योग शिक्षक की नियुक्ति की जाए जिससे योग के माध्यम से लोगों को रोगमुक्त बनाया जा सके एवं योग शिक्षक की ड्यूटी का समय प्रातःकाल एवं सायंकाल हो जिससे गांव के लोग तथा शहरवासी योग का लाभ ले सकें एवं अच्छा जीवन जी सकें।
13. शहरों एवं गॉवों में हर वार्ड स्तर पर बड़े–बड़े बोर्ड एवं होर्डिंग्स लगाया जाए जिससे रोगों के लक्षण तथा बचाव के उपाय एवं सावधानियॉ पर विस्तार से प्रकाश डाला जाए जिससे लोग रोगी न हों, उससे बचाव पहले से कर सकें।
14. प्रिंट मीडिया एवं इलेक्ट्रानिक मीडिया को स्वास्थ्य के प्रति सचेत रखने हेतु एक निश्चित स्थान एवं निश्चित समय के लिए निःशुल्क प्रचार–प्रसार की बाध्यता हो जिससे स्वास्थ्य के प्रति लोग सजग रहें एवं स्वस्थ रहें जिससे उनका जीवन स्तर बेहतर हो सके एवं अपनी ऊर्जा राष्ट्र निर्माण में लगा सकें एवं एक सषक्त, रोगरहित, ऊर्जावान एवं प्रगाढ़ लोकतान्त्रिक मूल्यों से आच्छादित राष्ट्र को विकसित राष्ट्र बनाने में सहयोग कर सकें।

यदि व्यक्ति बीमार या रूग्ण रहेगा तो वह अपनी ऊर्जा अपने शरीर को ठीक करने में लगाएगा लेकिन यदि वही व्यक्ति निरोगी रहेगा तो वह अपना अमूल्य सार्थक समय समाज के निर्माण एवं राष्ट्र के निर्माण में लगाएगा जिससे वैश्विक स्तर पर हमारे लोगों एवं हमारे देश की भूमिका लोकतान्त्रिक मूल्यों एवं वसुधैव कुटुम्बकम को आगे बढ़ाने एवं दुनिया के पथ–प्रदर्शक के रूप में होगी जिससे हमारी सभ्यता एंव संस्कृति की पूरे विश्व में डंका बजेगा और उसका परिणाम होगा– सबका साथ सबका विकास सबके साथ सबका विश्वास।

आज आवश्यकता इस बात की है कि जनता स्वास्थ्य के प्रति जागरूक हो एवं सरकारें संवेदनशील हों

जिससे रोगों पर नियन्त्रण पाया जा सके क्योंकि स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का वास रहेगा एवं व्यक्ति की ऊर्जा केवल शरीर पर ही न खर्च कर समाज एवं राष्ट्र के लिये उपयोग करेगा जिससे समृद्ध समाज एंव समृद्ध राष्ट्र का निर्माण होगा एवं लोग खुशहाली का जीवन जिएंगे।

निष्कर्ष

हमारे देश में चाहे प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र हों या सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र हों या जिला अस्पताल या मेडिकल कालेज, पर्याप्त मेडिकल स्टॉफ का अभाव एवं मशीनों तथा यन्त्रों की कमी के कारण लोगों का सफल इलाज नहीं हो पाता है जिससे जीवन–स्तर खुशहाल नहीं हो पाता है, इसलिए जरूरी है कि पर्याप्त स्टॉफ एवं जॉच मशीनें हों जिससे लोगों को हर समय हर स्तर पर इलाज सुगमतापूर्वक प्राप्त हो सके एवं लोगों के जीवन स्तर में सुधार हो सकें।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *प्रतियोगिता दर्पण, मई, 2016 पृ0सं0–109–10*
2. *अमर उजाला, 27 नवम्बर, 2019*
3. *दैनिक आज, 06 दिसम्बर, 2017*
4. *प्रतियोगिता दर्पण, अगस्त, 2017*
5. *हिन्दुस्तान, 04 मई, 2017*
6. *प्रतियोगिता दर्पण, सितम्बर, 2018*
7. *दैनिक जागरण झॉसी, 08 दिसम्बर, 2018*